6

बच्चे अध्यापक की परीक्षा लेते हैं*

कन्हैयालाल वर्मा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कई बार बच्चे कुछ विनोद भी कर देते हैं। यह एक ऐसा पल होता है, जिसमें बच्चे एक प्रकार से शिक्षक की परीक्षा लेते हैं। यदि बच्चों द्वारा किए गए विनोद को लेकर शिक्षक उत्तेजित और क्रोधित हो जाता है तो एक प्रकार से वह अनुत्तीर्ण हो जाता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक भी विनोद को विनोद रूप में ही ले, तो वह बच्चों के मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

अगस्त 2007 को किसी दिन मुझे होटल प्रबंधन की ओर से गाइडों की कक्षा में राजस्थान की चित्रकला पर व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया। व्यवस्थापक बिना मेरा कोई परिचय दिए मुझे कक्षा में छोड़ गए। कक्षा में लगभग पचास के आस-पास गाइड रहे होंगे। उनमें मात्र एक महिला गाइड थीं। ज्यों ही मैं कक्षा के समक्ष प्रस्तुत हुआ कि पिखे जैसी आवाज़ गूँजी और पूरी कक्षा ठहाका लगाकर हँसने लगी। पिखे की आवाज़ इतनी यथार्थ थी कि कक्षा को हँसते हुए देखकर मुझे भी हँसी आ गई। सब मेरी ओर देखने लगे कि मैं क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करता हूँ। इसी दौरान मेरी हँसी मुस्कुराहट तक आ चुकी थी। मैंने मुस्कुराते हुए प्रसन्नता के अंदाज़ में कहा कि सुंदर स्वागत के लिए आप समस्त महानुभावों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। इतना कहना था कि कक्षा में शांति का साम्राज्य छा गया। फ़िर तो कक्षा मेरे हाथ में थी। एक घंटा कब पूरा हो गया – न मुझे पता चला और न ही कक्षा को। व्याख्यान समाप्त होने के पश्चात् मुझे गाइडों ने घेर लिया था और चित्रकला पर बहुत अच्छे-अच्छे प्रश्न करने लगे थे। मैंने यथासंभव सबका समाधान किया।

मेरे जीवन का अधिकांश समय कक्षा में व्यतीत हुआ है। यह स्वाभाविक है कि विनोद के क्षण आते रहे और मैं उनका भरपूर आनंद लेता रहा। विद्यार्थियों के क्रिया-कलापों से कभी विचलित नहीं हुआ। कुछ विनोद के क्षण आज भी मुझे आनंद से भर देते हैं।

*राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका *अनौपचारिका*, मई 2009 से साभार

कक्षा आठ में छात्रों को प्रतिकृति चित्र बनाना सिखा रहा था। मैंने श्यामपट्ट पर अजंता का एक अलंकरण बनाया। छात्रों से कहा कि इसे देखकर अपनी चित्रकला की कॉपी में बनाएँ। अपेक्षा तो यह थी कि छात्र चित्रण में व्यस्त हो जायेंगे, लेकिन एक अज़ीब-सी फ़ुसफ़ुसाहट से कक्षा में हलचल शुरू हो गयी। तभी पीछे बैठे एक छात्र ने पड़ोसी छात्र की कॉपी ऊँची करते हुए कहा, 'देखिए सर, इसने आपका चित्र बनाया है' और पूरी कक्षा हँसने लगी। मैंने पास जाकर उस चित्र को देखा तो बालमन की सहज अभिव्यक्ति देखकर मुझे भी हँसी आ गया। परंतु जिस छात्र ने वह चित्र बनाया था उसकी स्थिति खराब थी मानो काटो तो खून नहीं अथवा जैसे चोरी पकड़ में आ गयी हो। पूरी कक्षा की दृष्टि दोनों पर टिक गयी। मैंने मुस्कुराते हुए उस छात्र से कहा – 'बहुत सुंदर चित्र बनाया है।' इतना कहना था कि कक्षा में प्रसन्नता का वातावरण बन गया, और छात्र चित्रण में संलग्न हो गए।

एक दिन कक्षा बारह में 'जयपुर शैली' को पढ़ा रहा था। जयपुर सांभर के निकट है अत: प्रश्नोत्तर विधि से भूमिका में जयपुर का संक्षिप्त परिचय छात्रों से प्राप्त करना था। कुछ प्रश्नों के पश्चात् मैंने एक प्रश्न यह भी किया- 'जयपुर में स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण किसी एक इमारत का नाम बताइए?' इसे सुनते ही पीछे बैठे एक ऐसे छात्र ने हाथ खड़ा कर दिया जो अकसर प्रश्नोत्तर में निष्क्रिय-सा ही रहता था। मैंने उसी से पूछ लिया, उसने तपाक से कहा, 'राजमंदिर' और कक्षा हँसने लगी। मुझे भी हँसी आ गयी। कुछ ही क्षणों में संयत होते हुए मैंने कहा, 'उत्तर सही है, मेरा प्रश्न ही ठीक नहीं था, मुझे किसी एक इमारत के स्थान पर किसी प्राचीन इमारत का नाम पूछना चाहिए।' फिर तो प्रश्नोत्तर विधि एवं विषय के अनुकूल पाठ और अधिक रोचक बन गया।

मुझे कभी-कभी अपने घर में भी कक्षा का अनुभव होने लगता है। मेरे मित्र की सात वर्षीय पौत्री तनुश्री एक दिन आकर कहती है, 'दादू, देखो मैंने यह चित्र बनाया है।' उसे पता है कि मैं चित्र बनाता हूँ, और उसे भी चित्र बनाना सिखा सकता हूँ, अत: इसी आशय से वह मेरे पास आयी थी। मैं उसका बनाया चित्र देखने लगा। उसने पानी में कमल का फूल बनाया था, कली भी थी, एक मछली तैर रही थी, बस। चित्र बहुत सुंदर था। मैंने कहा– 'इसमें कमल का पत्ता तो है ही नहीं।' वह हँसने लगी और थोड़ी देर हँसने के बाद खिलखिलाते हुए बोली, 'पत्ता तो पानी में डूब गया।' और मुझे भी हँसी आने लगी।

एक दिन मेरे कुछ छात्र अपने एक साथी छात्र की शिकायत लेकर आए, और कहने लगे, 'सर, उधर बरामदे में चलकर देखिए, कालू ने सारा आँगन चॉक, से ऊटपटाँग चित्र बनाकर खराब कर दिया। मैंने जाकर देखा। तब तक छात्र कालू को भी पकड़कर ले आए थे। कालू बहुत ही डरा हुआ और सहमा-सा था। मैंने आँगन पर उसका बनाया हुआ चित्र देखा। टहनी पर लगा गुलाब का फूल, उस पर उड़ता हुआ तोता, झोंपड़ी और पास में बरगद का पेड़, एक गाय चरती हुई आदि। मुझे सब कुछ

अच्छा लग रहा था, लेकिन छात्र दबी हुई हँसी, हँस रहे थे। मैं उनकी मनोदेश भाँप गया गया था। मैंने कालू के कंधे पर प्यार भरा हाथ रखते हुए छात्रों से कहा, 'थोड़ा ज़ोर से हँसकर प्रसन्नता व्यक्त करिए। कालू ने बहुत सुंदर चित्र बनाया है' मैंने कालू से आँगन पर चित्र बनाने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसके पास कॉपी, पेंसिल और रंग खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। यही कारण है कि वह कक्षा से अनुपस्थित भी रहता है, और अपना शौक आँगन या मिट्टी पर चित्र बनाकर पूरा कर लेता है। मैंने उसके लिए कॉपी, पेंसिल और रंग की व्यवस्था करवा दी। अब तो कालू, कमलेश कुमार के नाम से जाना जाता है, और किसी बैंक में अधिकारी के पद पर कार्यरत है।

मैं छात्रों को अपने चारों ओर बैठाकर चित्र बनाना सिखाया करता था। ऐसे ही अवसर पर एक छात्र को शरारत सूझी। वह मेरे कंधे की तरफ़ बैठा हुआ था। उसने एक तिनका मेरे कान पर छुआकर तुरंत हटा लिया। मैंने समझा कोई मक्खी है, और मैं उसे हाथ से उड़ाने लगा। यह क्रिया तीन-चार बार हुई। तब तक अन्य छात्र भी इस क्रिया को समझ चुके थे। कक्षा में हल्की हँसी के साथ फ़ुसफ़ुसाहट शुरू हो गयी। मुझे भी दाल में काला नज़र आया, और अंतिम बार जब इस हरकत की पुनरावृत्ति हुई तो झट से मैंने तिनके सहित उस छात्र का हाथ पकड़ लिया। कक्षा तो हँसने लगी और छात्र घबरा गया। छात्र को घबराया हुआ देखकर, उसे संयत करने के लिए मैं हँसने लगा। मैंने इतना ही कहा, 'ऐसा नहीं करते है' और इसके बाद सदा वह छात्र कक्षा में संयत रहने लगा।

कक्षा में 'विनोद के क्षण' चित्रकला विषय में ही नहीं आते, अपितु प्रत्येक विषय में आते हैं। यह एक ऐसा अवसर होता है, जिसमें अध्यापक की परीक्षा छात्र लेते हैं। यदि अध्यापक थोड़ा भी विचलित हुआ तो समझिए वह अनुत्तीर्ण है और यदि विनोद को आनंद के रूप में लिया तो उत्तीर्ण है।

❑❑❑